नमाज की एहमीयात

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

☞ नमाज गुनाहो को मिटाती हे.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि अगर तुम्मे से किसी के दरवाजे पर कोई नहर हो जिसमे वो हर दिन पांच बार गुस्ल करता हो तो बतावो उसके बदन पर कुछ भी मैल कुचैल बाकी रह सकता हे? सहाबा किराम ने कहा कि नही उसके बदन पर कुछ भी मैल कुचैल नही रहेगा. आपﷺ ने फरमाया कि यही हाल पांच वकत की नमाजो का हे, अल्लाह उन नमाजो के जरीये गुनाहो को मिटाता हे. [बुखारी, मुस्लीम; अबू हुरैरा रदी रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ गुनाहों का कफ्फारा.

अब्दुल्लाह इबने मसउद (रदी) फरमाते हे कि एक आदमी ने एक अजनबी औरत का बोसा ले लिया, फिर वो नबी करीम ﷺ के पास आया और आप को इस गुनाह के बारे मे

बताया तो रसूलुल्लाहﷺ ने ये आयत पढी "व आकिमिस्सलाता तरफन्नहारि व जुलफम्मिनल्लैलि, इन्नल हसनाति युजहिबनस सय्यिआति" इस पर उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल क्या ये मेरे लिये खास हे? आपने फरमाया कि नही मेरी उम्मत के सब लोगो के लिये हे. ये हदीस उपर की हदीस की और ज्यादा तशरीह [व्याख्या] करती हे जिसमे बताया गया हे कि नमाज गुनाहो को मिटा देती हे. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

☞ कामिल नमाज़ मगफिरत का जरिया.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया, ये पांच नमाजे हे जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दो पर फर्ज किया हे तो जीस शख्स ने बेहतर तरीका पर वुजू किया और उन नमाजो के मुकर्रर किये हुवे वकतो मे उन्हे अदा किया और रूकू व सज्दे ठीक से किये, और उसका दिल अल्लाह के सामने नमाजो मे जुका रहा तो अल्लाह ने उसकी मगफिरत अपने जीम्मा ले ली, और जिसने ऐसा नही किया तो उसके लिये अल्लाह का ये वादा

नही हे, अगर चाहेगा तो उसको माफ कर देगा, और चाहेगा तो उसको अजाब देगा.

[अबू दाउद अन उबादा बिन सामित रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ की हिफाज़त की एहमियत.

अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रदी) से रिवायत हे, उन्होंने कहा कि आपﷺ ने एक दिन नमाज पर तकरीर फरमायी और कहा जो शख्स अपनी नमाजो की ठीक तरह से देख भाल करेगा तो वो उसके लिये कयामत के दिन रौशनी और दलील बनेगी और निजात का जरीया बनेगी और जो अपनी नमाजो की देख भाल नही करेगा तो ऐसी नमाज उसके लिये ना तो रौशनी बनेगी और ना दलील बनेगी और ना निजात का जरीया बनेगी. [मिश्कात रिवायत का खुलासा]

☞ मोमिन और मुनाफिक की नमाज का फर्क.

इस रिवायत के जरिये मोमिन और मुनाफिक की नमाज का फर्क जाहिर किया गया हे मोमिन अपनी नमाज वकत पर पढता हे रूकू और सजदा ठीक से करता हे उसका दिल अल्लाह की याद में लगा होता हे और मुनाफिक नमाज

ठीक वकत पर नहीं पढता रूकू और सजदा ठीक से नहीं करता और उसका दिल अल्लाह के सामने नहीं होता वैसे तो हर नमाज अहम हे लेकिन फजर और असर की एहमियत जियादा हे असर का वकत गफलत का वकत होता हे आम तौर से लोग अपने कारोबार में लगे रहते हे और चाहते हे की रात आने से पहले तिजारत को पूरा कर ले और अपने फेले हुवे कामो को समेटले इसलिए अगर मोमिन का जेहन बेदार न हो तो असर की नमाज खतरे में पद सकती हे और सुबह की नमाज की एहमियत इसलिए हे की नींद का वकत होता हे सबको मालूम हे की रात के आखरी हिस्से की नींद बडी गहरी और मीठी होती हे. अगर इन्सान के दिल में इमान जिन्दा न हो तो अपनी मेहबूब नींद को छोड कर अल्लाह की याद के लिए नहीं उठ सकता. [मुस्लीम अन अनस रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ मुहाफिज़ फरिश्तों की बदली होती हैं.

ये रिवायत फजर और असर की एहमियत को खूब जाहिर

करती हे फजर की नमाज में रात के फरिश्ते शरीक होते हे और वो फरिश्ते भी जिन्हें दिन में अपना काम करना हे. इसी तरह असर की नमाज में भी दोनों किसम के फरिश्ते मोमिनो के साथ जमात में शरीक होते हे मोमिन की इससे बडी खुशनसीबी और क्या होगी की उनको फरिश्तो का साथ नसीब हो. [बुखारी, मुस्लीम; अन अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ नमाज़ छोड देने से ज़िम्मेदारी का एहसास खत्म हो जाता हैं.

उमर बिन खत्ताब (रदी) से रिवायत हे कि उन्होंने अपने तमाम गवरनरो को लिखा कि तुम्हारे सारे कामो मे सबसे ज्यादा ऐहमियत मेरे नजदीक नमाज की हे जो शख्स अपनी नमाज की हिफाजत करेगा और उसकी देख भाल करता रहेगा तो वो अपने पूरे दीन की हिफाजत करेगा और जो नमाज को बरबाद कर देगा तो वो और सारी चीजो को उस्से ज्यादा बरबाद करने वाला होगा. [मिश्कात रिवायत का खुलासा]

☞ कयामत के दिन अल्लाह तआला का साया.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया सात किस्म के लोगो को अल्लाह अपने साया मे जगह देगा उस दिन जीस दिन सिवाय अल्लाह के साये के कोई साया ना होगा.

१] इन्साफ करने वाला बादशाह

२] वो जवान जीस्की जवानी अल्लाह की बन्दगी मे गुजरी

३] वो आदमी जिसका दिल मस्जिद से अटका रहता हे जब मस्जिद से निकलता हे तो फिर दोबारा मस्जिद मे दाखिल होने का इन्तेजार करता रहता हे

४] वो दो आदमी जिनकी दोस्ती की बुनियाद अल्लाह और अल्लाह का दीन हे उसी जज्बे के साथ वो इकट्ठा होते हे और यही जज्बा लिये वो जुदा होते हे

५] वो आदमी जिसने तनहाई मे अल्लाह को याद किया और उसकी आंखो से आसू बेह पडे

६] वो आदमी जिसको किसी उचे खानदान की हसीन व

खूबसूरत औरत ने बदकारी [गलत काम] के लिये बुलाया तो उसने सिर्फ अल्लाह के डर की वजह से उसे इन्कार कर दिया

७] वो आदमी जिसने इस तरह सदका किया कि उसका बाया हाथ भी नही जानता कि दाया हाथ क्या दे रहा हे. [बुखारी, मुस्लीम; अन अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ दिखावा शिर्क हैं.

शद्दाद बिन औस (रदी) फरमाते हे के मेने रसूलुल्लाहﷺ को ये फरमाते सुना कि जिसने दिखाने के लिये नमाज पढी तो उसने शिर्क किया, और जिसने दिखाने के लिये रोजा रखा तो उसने शिर्क किया, और जीसने दिखाने के लिये सदका किया तो उसने शिर्क किया. [मुसनदे अहमद रिवायत का खुलासा]